हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास

सुनन्दा पाठक

Scanned by TapScanner

संकेत–सूची

अ०सं०र०	अनूप संगीत रत्नाकर
अ०सं०वि०	अनूप संगीत विलास
अभि०	अभिनव
अभि०शाकु०	अभिज्ञान शाकुंतलम्
कल्लि०	कल्लिनाथ
G.O.S.	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज़
नान्य०	नान्यदेव
ना०शि०	नारदीय शिक्षा
ना०शा०	नाट्य शास्त्र
बृह०	बृहद्देशी
भा०सं०इति०	भारतीय संगीत का इतिहास
भ०भा०	भरत भाष्यम्
भ०को०	भरत कोश
भा०क्र०पु०मा०	भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिका
भा०सं०शास्त्र	भातखंडे संगीत शास्त्र
रस०कौ०	रस कौमुदी
राग वि०	राग विवोध
रा०तरंगिणी	राग तरंगिणी
रा०द०	राग दर्पण
शाकु०	शाकुंतलम्
शार्ङ्ग०	शार्ङ्गदेव
सं०र०	संगीत रत्नाकर
सं०दा०	संगीत दामोदर
सं०स०सार	संगीत समय सार

Scanned by TapScanner

सं०रा०	संगीत राज
सं०पा०	संगीत पारिजात
सं०द०	संगीत दर्पण
सं०चू०	संगीत चूड़ामणि
सं०म०	संगीत मकरंद
सं०पद्ध०तुल०अध्य०	संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन
सं०विशारद	संगीत विशारद
सु०	सुधा कलश

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

पृ० सं०

आमुख vii—viii

प्राक्कथन ix—xii

संकेत-सूची xiii—ivx

प्रथम अध्याय : राग शब्द की व्युत्पत्ति एवं राग की परिभाषाएँ 1—30

राग शब्द की व्युत्पत्ति, राग की परिभाषाएँ, राग का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में—रामायण, नाट्यशास्त्र, नारदीय शिक्षा, कालिदास की कृतियों में, पुराण, कोहल, दुर्गाशक्ति, याष्टिक आदि के संदर्भ में। पारिभाषिक रूप में राग प्रचार में आने से पूर्व राग के विषय में विभिन्न मत। राग की उत्पत्ति के विषय में किंवदंतियां।

द्वितीय अध्याय : राग का ऐतिहासिक विकास 31—156

(अ) राग पारिभाषिक अर्थ में कौन-सी शताब्दी में प्रचार में आया ? इसका श्रेय किस ग्रंथकार को दिया जाना चाहिए, इस विषय में भिन्न मत, उनका समर्थन एवं खंडन। रागों का ऐतिहासिक विकास भिन्न-भिन्न ग्रंथकारों द्वारा।

(ब) जाति स्वरूप तथा जाति से रागोत्पत्ति।

(स) ग्राम राग, उपराग, राग, भाषा, विभाषा का आपस में सम्बन्ध।

(द) प्राचीन राग गायन तथा उसमें हुए परिवर्तन।

तृतीय अध्याय : राग विस्तार के तत्व 157—213

नाद, श्रुति, स्वर, वर्ण, अलंकार, आलाप, आलप्ति, तान, गमक, स्थाय, आक्षिप्तिका।

Scanned by TapScanner

चतुर्थ अध्याय : राग वर्गीकरण 214—259

वर्गीकरण का अर्थ, ग्राम, मूर्च्छना वर्गीकरण, शार्ङ्गदेवोक्त वर्गीकरण, मध्यकालीन स्त्री-पुरुष राग वर्गीकरण तथा मेल राग वर्गीकरण, शुद्ध, छायालग, संकीर्ण वर्गीकरण। रागांग वर्गीकरण, आधुनिक राग-वर्गीकरण।

पंचम अध्याय : राग तथा रस 260—284

षष्ठ अध्याय : राग का गायन समय तथा ऋतुओं से सम्बन्ध 285—299

उपसंहार— 300—303

परिशिष्ट— 304—349

संदर्भ ग्रंथ सूची— 350—358

शुद्धिपत्र 359—362

Scanned by TapScanner